जोहन्सबर्ग (द. अफ्रीका)
दिसम्बर ०५, २०००

सन्देश संख्या ३१

क्राइस्ट कॉन्शसनेस

क्राइस्ट कॉन्शसनेस (पूर्ण चैतन्य) अस्तित्व का एकात्मबोध है जिसमें उद्दीपन और अनुक्रिया एकात्मक लय बन जाते हैं। तब द्वैत का विलय हो जाता है। उस अवस्था में ज्ञाता और ज्ञेय एक हो जाते हैं। सत् अस्तित्व है, न कि अनुभव।

तभी ईसा मसीह से यह उद्गार प्रकट होता है – मैं और परमपिता एक हैं।

वेदान्त की उद्घोषणा है – अहम् ब्रह्मास्मि।

अली मंसूर के मुँह से अनायास ही निकल पड़ता है – अनल हक़।

बुद्धत्व व्यक्त करता है – शून्य पूर्ण।

लाहिड़ी महाशय ने गाया – शून्येर साथे कोला कुलि।

यह स्थिति साम्यावस्था अर्थात् शिवोऽहं की परमानन्द एवं मंगलमय अवस्था है जिसमें एक सूक्ष्म अद्वितीयता विद्यमान रहती है।

अहंबोध विभेदकारी है, जो मन की गति को जीवन की गति से अलग–थलग कर देता है। इस प्रकार यह अनुभव और अस्तित्व के मध्य एक विभाजन रेखा खींच देता है। इस स्थिति में अहम् अपने विकल्पों और उलझनों के माध्यम से अपने आपको पुनः प्रवर्तित करते हुए अपने दुःख और दुःखभोग को और बढ़ा लेता है।

क्राइस्ट कॉन्शसनेस न तो विचार है और न ही प्रचार। यह एक अन्तर्दृष्टि और प्रत्यक्षबोध है। यह पौरोहित्य कौशल का शुष्क शब्दाडम्बर नहीं है जो धर्मान्धता और ध्वंस की ओर ले जाता है। यह अनुभवगम्य और अनुभवातीत, क्षणभंगुर एवं शाश्वत, आधिपत्य एवं समर्पण का योग (एकीकरण) है जिससे पूर्णत्व का अवतरण एवम् आनन्द की प्राप्ति होती है। समर्पण आध्यात्मिक संप्रभुता भी है। ऐसी अवस्था में आस्था या श्रद्धा प्रकृति की भाषा हो जाती है, न कि मन की। तब आस्था मुक्तिदायक होती है, न कि बन्धनकारक । तब ध्यान भी कोई थकाऊ एवम् उबाऊ यांत्रिक उपक्रम नहीं, बल्कि जीवन–शक्ति और ओजस्विता से पूर्ण शुद्ध और चैतन्य का सहज एवं सरल रूप बन जाता है।

ईसा मसीह के रूप में आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व जो आश्चर्यजनक आध्यात्मिक ऊर्जा इस भूमण्डल पर अवतरित हुई थी उसे आकषक एवं पवित्र आवरण से युक्त झूठों पर आधारित विश्वास – पद्धतियों के सहारे नहीं समझा जा सकता है। अहम् की गति पर निरन्तर मनन एवं चिन्तन (स्वाध्याय), कुछ कम्पनों के अभ्यास (तापस) और मिथ्याभिमान एवं निहित स्वार्थों के चौखट के बाहर की सच्चाई की अनुभूति (ईश्वर प्रणिधान), जो योग–प्रक्रिया के अंग एवं सोपान हैं, के द्वारा क्राइस्ट कॉन्शसनेस का प्रत्यक्षबोध संभव है।

क्रूस (+) पवित्र है क्योंकि यह अहंभाव के विनाश का प्रतीक (अंगरेजी भाषा के ख अक्षर, जिसका हिन्दी भाषा में अर्थ 'मैं' होता है, को बीच से काटता हुआ प्रतीत होता है) और गणित की योगक्रिया (अर्थात् जोड़) के प्रतीक से साम्य रखता है।

स्वर्ग और नरक हमारे अन्दर हैं। 'निर्मनता' बुद्धिहीनता नहीं, स्वर्ग है। 'मन', स्मृति नहीं, नरक है। मन स्मृति के विषयों के साथ अतिशय भावुकता तथा उनमें अत्यधिक संलिप्तता है। स्मृति का उपयोग विज्ञान और तकनीकी के विकास के लिए होता है, जबकि प्रदूषित मन विज्ञान और तकनीकी का उपयेाग युद्ध और दुर्गति की विभीषिका उत्पन्न करने के लिए करते हैं।

क्राइस्ट कॉन्शसनेस में शून्य बोध का केन्द्र है तथा अहम् इसकी परिधि पर है।

ॐ यीशु ॐ